आचार्य एलाचार्य

जीवन-परिचय : एलाचार्य का स्मरण आचार्य वीरसेन ने विद्यागुरु के रूप में किया है। उन्होंने लिखा है—जिसके आदेश से मैंने इस सिद्धान्तग्रन्थ को लिखा है वे एलाचार्य मेरे ऊपर प्रसन्न हों। अर्थात् वीरसेनाचार्य ने एलाचार्य की कृपा से आगम-सिद्धान्त को लिखे जाने का निर्देश किया है।

वप्पदेव के पश्चात् कुछ वर्ष बीत जाने पर सिद्धान्तशास्त्र के रहस्य ज्ञाता एलाचार्य हुए हैं। ये चित्रकूट नगर के निवासी थे। इनके साथ में रहकर ही वीरसेनाचार्य ने सकल सिद्धान्तों का अध्ययन किया है। वीरसेन के गुरु होने के कारण ये सिद्धान्तशास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान थे। एलाचार्य वाचकगुरु थे और उनकी प्रतिभा अप्रतिम थी।

एलाचार्य वीरसेन के समकालीन अथवा कुछ पूर्ववर्ती हैं, अत: वे आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और नवम शती के पूर्वार्द्ध के विद्वानाचार्य हैं।

रचना-परिचय : एलाचार्य का कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है।